जल जो न होता

डॉ. रामप्रसाद 'अटल'

प्रकृति ने हमें खूब सोच-समझ कर धरती से तीन गुणा जल दिया है, किन्तु वह सारा हमारे काम का नहीं। कुछ सागर जल, कुछ ठोस जल (बर्फ)। आबादी बढ़ने के साथ तरल जल कम पड़ता है। हिम-जल को हम कैसे बांध सकते हैं और सागर जल नमकीन है। विश्व के विकास के साथ विश्व का तापमान बढ़ा है और जल एवं ताप की कड़ी शुत्रता है। जो जल प्रयोग के लिये बचता है, वह वर्तमान आबादी के लिये यथेष्ट नहीं है। अर्थात् भविष्य में खतरा स्पष्ट दिख रहा है। यह खतरा हमने स्वयं मोल लिया है। कुछ तो विवशता है और कुछ अज्ञानता के वशीभूत।

कुछ दिन हुये एक फिल्मी गीत सुना था-"जल जो न होता तो जल जाता जग" गीतकार ने कितनी गहराई की बात कही है। फिल्म केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं वह हमारे अतीत के दर्शन कराती और वर्तमान में घुमाती। एक छोटी सी बात को बड़े पर्दे पर दिखाता ओर हमें सजग करता है। जो हमने इतिहास में नहीं पढ़ा वह हमें सम्मुख दिखाता है। तभी तो भारत का चलचित्र उद्योग विश्व में दूसरे स्थान पर है और प्रथम हॉलिवुड है। लाखों मनुष्य इस उद्योग से पेट भरते हैं।

कवि, लेखक, साहित्यकार अपनी भावनाओं से भी हमारा साक्षात्कार करवाते हैं। उपरोक्त गीत गीतकार की भावना का ही एक अंश है। प्रकृति ने हमें जल का सानिध्य दिया है। यदि यह न होता तो वास्तव में जग जल जाता। यदि कोई देवता कहे कि मैं तुम्हें अमृत देता हूँ और तुम जल हमें दे दो, तो हम जल ही मांगेंगे। अमृत लेकर जल के बिना हम कैसे जीवित रह सकते हैं?

प्रकृति ने हमें खूब सोच-समझ कर धरती से तीन गुणा जल दिया है, किन्तु वह सारा हमारे काम का नहीं जैसे कुछ सागर जल, कुछ ठोस जल (वर्फ)। आबादी बढ़ने के साथ तरल जल कम पड़ता है। हिम-जल को हम कैसे बांध सकते हैं और सागर जल नमकीन है। विश्व के विकास के साथ विश्व का तापमान बढ़ा है और जल एवं ताप की कड़ी शुत्रता है। जो जल प्रयोग के लिये बचता है, वह वर्तमान आबादी के लिये यथेष्ट नहीं है। अर्थात् भविष्य में खतरा स्पष्ट दिख रहा है। यह खतरा हमने स्वयं मोल लिया है। कुछ तो विवशता है और कुछ अज्ञानता के वशीभूत। देखिये कुछ कारणः

1. विकास की दौड़ में कुएं खुदना बन्द हो गये। उनकी जगह हैन्डपंप और शोधित जल के नल। धरती में चारों ओर से छन-छन कर संचय होने वाला जल, कुएं के भंडार अब नहीं होते। हैन्डपंप का भी वही भाग्य है। उन्हें भी पानी छन कर नहीं

मिलता है।

2. घर मकान झोपड़े सब पक्के हो गये और जिस घर पर ये बनते हैं उनके पास-पड़ोस के मार्ग सिमेन्टेड और डामर युक्त बन गये। पानी नालों से नदियों में और वहां से सागर में चला जाता है। वर्षा का जल संचय नहीं हो पाता। एक वर्ष वर्षा का पानी पहले चलता था और कुएं हलक तक भरे होते थे पर अब नहीं।

3. जहॉ नदी नाले नहीं थे, वहां कुओं से सिंचाई होती थी जल के भंडार की भी हमारे यहां सुविधा नहीं। घरों के ऊपर वर्षा का पानी जमा किया जाये, तो यह रोना न पड़े। जनमानस अपना दायित्व नहीं समझते। सारा भार सरकार पर डाल स्वयं मस्ती काटते। सरकार क्या है, जनमानस के अवदान का संचित समूह।

4. भारत में आधार-भूत आवश्यकताओं के लिये धन व प्लानिंग की कमी है। देश के अन्दर बहुत ही कम बांध हैं, वहां वर्षा में पानी ओवर-फ्लो होकर जहां से आया वहीं चला जाता है। बांधों के स्टैन्डबाई बांध नहीं, इसलिए वर्षा का अधिक्य जल सागर को चला जाता है।

5.(अ) कई वर्ष पूर्व महाराष्ट्र का कोयना बांध इसी विषम परिस्थिति में आ गया था। बड़ी भयंकर परिस्थिति आ गई थी। महाविनाश हुआ था। प्रत्येक के मुख से 'हाय राम' 'हाय राम' निकलता था और उफान के जल ने तबाही मचा दी थी।

5.(ब) 1 सितम्बर सन् 1957 में उत्तर प्रदेश का बनवसा बांध ओवर फ्लो हो गया, जिसने अपना पानी 'खन्नौत नदी' में छोड़ा और तटीय शहर शाहजहांपुर तबाह हो गया।

5.(स) अगले वर्ष 1958 में वही हाल लखनऊ का हुआ वहां की नदी में पानी आया और तराई का इलाका सब डूब गया था। यह ओवर फ्लो कन्ट्रोल न हो सका।

6. इन बांधों के स्टैन्ड-बाई बांध होने चाहिये, जो मुख्य बांधों की बद-हज़्मी रोक सकें। जल जहां से आता वहीं लौट जाता है। हम प्यासे के प्यासे रह जाते हैं।

अच्छे-अच्छे शिक्षित एवं संभ्रान्त लोगों को भी जल की बर्बादी की अनुमति नहीं है। एक मित्र के यहां देखा शेव कर रहे थे, वाश-बेसिन का नल खुला था नल का जल व्यर्थ बह रहा था और वे मस्त थे शेविंग में। बर्बादी की अनुमति नहीं थी उन्हें।

मुख्य मार्ग के पास नगर निगम का शोधित जल की टंकी थी - जहां एक बाई लकड़ी से कपड़े को पीट रही थी और जल - प्रवाहमान था। कब से आरंभ हुआ होगा और कब खत्म हुआ होगा। ईश्वर के अवदान को हम संभाल कर रख नहीं सकते और सुख मांगते हैं।

अभी-अभी अपने मूल निवास शाहजहांपुर (उ.प्र.) गया था। निवास के निकट शोधित जल का नगर पालिका का नल है। मैंने उसे देखा रात-दिन पानी बह रहा था किसी को उस पर दया नहीं आई पता नहीं कब से बह रहा था, जबकि 50 कदम दूरी पर पार्षद का घर है। मैंने एक लड़के को 50 रुपये दिये वह बिब कोक (टोंटी) लाया और उसे बन्द किया। बच्चे फिर भी दिन भर पानी से खेलते और कोई मना नहीं करता।

उपरोक्त हमारे, सबके कर्तव्य से दूर कर्म हैं और हमें सब को कर्म-फल तो मिलेगा ही। जागरुकता तभी आयेगी जब कड़ी ठोकर लगेगी। राम

दुख में ही अधिक याद आते हैं। राम, कृष्णा कहां तक नल बन्द करते फिरें ?

प्रकृति भी हमें सबक सिखाती है। वर्षा के आरंभ में ही मौसम - विज्ञानियों ने भविष्यवाणी की थी कि वर्तमान वर्ष में वर्षा औसत से कम होगी। फिर पहाड़ों पर बादल फटे। गतवर्ष भी ऐसा प्रलय आया था, जो बद्रीनाथ, केदारनाथ के मंदिरों को हिला गया और हजारों भक्तजन स्वर्ग गामी बन गये। पर्वतों पर एक नहीं कई ऐसे बांध बंधें जो जल को रोक सकें। पर्वतों पर तो करोड़ों क्यूसेक जल व्यर्थ चला जाता है।

भगीरथी का अवतार होने को था विष्णु समझते थे कि यदि उसको मृत्यु लोक में भेजा, तब उसके वेग को कोई रोक नहीं पायेगा और वह पाताल लोक चली जायेगी। तब भगीरथ को कहा "तुम शिव की तपस्या करो—वही भगीरथी को रोक पायेंगे। तब भगीरथ जी ने ऐसा ही किया तब भगीरथी (गंगा) पृथ्वी पर रूकी थी।

यह एक उदाहरण है जल को रोकने का शिव जैसे अनेकों बांध बंधे, जहां वह अमूल्य जल (अमृत) रोका जाये। यदि जनता नहीं जागरूक तो संसार तो सर्वोपरि है, वह जनमानस को टंकी बनवायें और वर्षा-जल को कैद कर रखा जाय और जनमानस से उसकी रिकवरी की जाये। शिशु यदि कम अक्ल है, तब पिता को यह धर्म निभाना चाहिये। बहुत से ऐसे हैं जिन्हें स्वयं की अनुभूति नहीं, अचेत हैं।

वह दिन दूर नहीं कि तीसरा विश्व युद्ध जल के लिये छिड़ेगा। ललना के लक्षण पलना में ही दिखते हैं, क्योंकि बोतलों और पैकटों में पानी बिकने लगा है फिर बाल्टी कलश की आवश्यकता नहीं रही। हमने अंग्रेजों को शौच के लिए टिशू पेपर इस्तेमाल करते देखा है। हमको भी वो कार्य न

प्रकृति ने हमें जल का सानिध्य दिया है। यदि यह न होता तो वास्तव में जग जल जाता। यदि कोई देवता कहे कि मैं तुम्हें अमृत देता हूँ और तुम जल हमें दे दो, तो हम जल ही मांगेंगे।

करना पड़े। जल की कमी के कारण हमारी शुद्धता का ह्रास हो जायेगा। बिना नहाये कैसे हम पूजा करेंगे और भोजन स्पर्श करेंगे?

एक बार महाराष्ट्र में वर्षा बहुत क्षीण हुई थी, तब साल्ट-प्रयोग से पानी बरसाया गया था। जल के अधिष्ठाता इन्द्र की मिन्नतें करनी पड़ेगी। यदि वह भी न मानें, तब महा विनाश का नाटक आरंभ होगा। समय से पहले चेत जाना शुभकर होगा। यदि चिड़ियां खेत चुग गई, तब 'हा' 'हा' करने से क्या लाभ होगा ?

हमने देखा है कि हम इतने जागरूक नहीं हैं। जहां तक सरलता है वहां तक मानव पैर फैलाता ही है और जब शंकुचन आरंभ होता है, तब पैर समेटता है। अतः सरकार व अन्य समाज सेवी संस्थायें अपना दायित्व निभावें, जनमानस के कानों में मंत्र फूंकें कि जल संकट आ रहा है। उसका उपयोग संभलकर करें, मितव्ययी बनें, बर्बादी रोकें, और यदि ऐसा न हुआ, तब राशन में पानी मिलेगा। ऐसी फिल्में बनायें और दिखायें, वर्ना जल की चोरी होगी, डाका पड़ेगा, लोग धन दौलत छोड़ पानी की तस्करी करेंगे। यदि ऐसा ही रहा, तब सरकार को जलव्यय-संहिता भी बनानी पड़ेगी।

अभी से पाठ्य-पुस्तकों में इसका राग अलापना चाहिये, इस पर मासिक गोष्ठी हों, इस प्रकार का साहित्य बने, वर्षा की एक बूँद भी व्यर्थ बहने न दें, तब हम इस महाकाल पर विजय प्राप्त करेंगे। मानव दृढ़, प्रतिज्ञ बने, तब विजय अवश्य हम वरण करेंगे। संसार का कोई कार्य कठिन नहीं - जब हम ठान लेते हैं, तब पर्वत को भी उखाड़ फेंकते हैं। यह केवल कल्पना नहीं, किन्तु यथार्थ है। उदाहरण हमारे समक्ष है देखें-और सुने कि बिहार के दशरथ मांझी ने 22 वर्ष तक एक अकेले ही पहाड़ को काटकर गांव वालों के लिये रास्ता बनाया है। जो साधारण समझ से परे है। बस, परोपकार का बीड़ा उठाने की आवश्यकता है। तो उठाइए कदम और रखिये विश्वास कि हम अवश्य सफल होंगे। भगीरथ ने तो तपकर आकाशीय गंगा (देवसीर) को मृत्युलोक पर उतार दिया है। केवल जनमानस को प्रबुद्ध एवं सचेत करना है।

संपर्क करें :
डॉ. रामप्रसाद 'अटल'
हर्षालय, पुरानी बस्ती रांझी,
जबलपुर 482005 (म.प्र.)

अमृत

जीवन का अमृत कहलाता
प्यासे की यह प्यास बूझाता

कहने को यह सादा है पानी
मानव की जल ही जान बचाता,

सदियों से इसे पी रहा मानव
सदियों तक यूं प्यास बूझाएगा

धरा से कम होता जा रहा है
खत्म हुआ नहीं हाथ आएगा,

बहा रहा जन इसे बेवजह ही
हो रहा भविष्य का जल बर्बाद

धरा पर भरा तीन चौथाई भाग
पर शुद्ध जल सदा आएगा याद,

एक फसीदी है जल पीने योग्य
इसको अब कौन बचा पाएगा

यूं ही घटता गया धरा का जल
भविष्य में घोर अंधकार आएगा,

जल बिना जीवन बनेगा निरस
जल से ही जीवन बच पाएगा

बचा लो अभी वक्त है जल को
वरना जन मिट्टी में मिल जाएगा,

अनमोल जगत में बहता जल है
जल है तो वहां जीवन होता है

जल बचा लो बच जाए जीवन
जल जन जीवन व प्राण होता है,

आज से जग में शपथ उठा लो
अति कम हो गया इसे बचा लो

जितने भी यत्न करो जल बचाओ
वरना भविष्य दाव पर लगा लो।।

संपर्क करें :
होशियार सिंह
मोहल्ला-मोदीका, कनीना-123027
जिला-महेंद्रगढ़ (हरियाणा)
फोन-9416348400